Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 11 |NOVEMBER 2025

मुगल काल में परिवहन और संचार व्यवस्था: एक अध्ययन

शंकर लाल बलाई [1]

[1] **गेस्ट फैकल्टी हिस्ट्री (NET), केकड़ी (अजमेर) राजस्थान.**

ABSTRACT:

मुगल काल (1526–1857) भारतीय इतिहास का वह विस्तृत और समृद्ध अध्याय है जिसमें प्रशासन, अर्थव्यवस्था, वाणिज्य, संस्कृति और कला के साथ-साथ परिवहन और संचार व्यवस्था का भी उल्लेखनीय विकास हुआ। मुगलों ने जिस विशाल भूभाग पर शासन स्थापित किया, उसमें प्रभावी प्रशासन, सैनिक गतिविधियों, वाणिज्यिक गतिविधियों, ग्रामीण-शहरी संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए एक मजबूत परिवहन तथा संचार प्रणाली अनिवार्य थी। मुगल शासन में परिवहन मुख्यत: स्थलमार्ग और जलमार्ग दोनों पर आधारित था। स्थल परिवहन में सड़कें, राजमार्ग, दक्खिन मार्ग, उत्तर-पश्चिम मार्ग, डाक-चौकियाँ, सरायों का जाल, घोड़े, बैलगाड़ियाँ, हाथी, ऊँट जैसे साधनों का महत्वपूर्ण योगदान था। जलमार्गों मंे गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा और गोदावरी जैसी नदियों के माध्यम से व्यापारिक और प्रशासनिक गतिविधियाँ संचालित होती थीं।

सड़क निर्माण को शासन की प्राथमिकता प्राप्त थी, विशेषकर शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित **ग्रैंड ट्रंक रोड (सड़क-ए-आज़म)** मुगल काल में और विस्तृत की गई। मुगलों ने इस मार्ग पर सरायों, कुओं, पुलों, वृक्षारोपण और डाक चौकियों का मंत्रणीय विस्तार किया। बैलगाड़ी और ऊँटगाड़ी उत्तर भारत में सबसे लोकप्रिय भूमि परिवहन साधन थे, जबकि दक्खिन और पश्चिम भारत में घोड़े तथा ऊँट परिवहन के प्रमुख साधन थे। संचार प्रणाली में मुगलों ने एक अत्यंत कुशल डाक व्यवस्था विकसित की थी। शेरशाह सूरी की **'डाक-चौकी प्रणाली'** को मुगल बादशाहों—विशेषतः अकबर—ने अत्यधिक सुदृढ़ किया। मुगलों की संचार प्रणाली दो मुख्य आधारों पर आधारित थी—

(1) कावुल प्रणाली(घुड़सवारसंदेशवाहक)

(2) दाक-चौकी प्रणाली (रनर/पैदल संदेशवाहक)

अकबर के समय में लगभग हर 2–3 कोस पर सरायें बनी हुई थीं, जिनमें संदेशवाहकों, सैनिकों, व्यापारियों और यात्रियों को रुकने, आराम करने, भोजन-पानी तथा सुरक्षा जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती थीं। इन सरायों को साम्राज्यभर में जोड़कर एक सुव्यवस्थित संचार तंत्र स्थापित किया गया था, जो न केवल प्रशासनिक कार्यों को सरल बनाता था, बल्कि व्यापारिक गतिविधियों को भी बढ़ाता था। मुगल काल में व्यापारिक कारवाँ, दूतों की यात्रा, संदेशवाहन, शाही आदेश (फरमान), जासूसी तंत्र और सूचनाओं के त्वरित संचरण में परिवहन और संचार व्यवस्था का गहरा महत्व था। प्रशासनिक एकता बनाए रखने, दूर-दराज़ के प्रांतों पर नियंत्रण स्थापित रखने, कर-संग्रह की व्यवस्था सुचारु करने, तथा साम्राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने में यही परिवहन-संचार तंत्र मुख्य आधार था। मुगल काल का परिवहन एवं संचार संगठन केवल प्रशासनिक औपचारिकता भर नहीं था, बल्कि भारतीय सामाजिक-आर्थिक ढांचे का प्रमुख अंग था, जिसने साम्राज्य की स्थिरता, विकास और निरंतरता को संभव बनाया।

KEYWORDS:

मुगल काल, परिवहन व्यवस्था, संचार प्रणाली, सराय, ग्रैंड ट्रंक रोड, डाक-चौकी, घुड़सवार दूत, व्यापारिक मार्ग, जलमार्ग, शेरशाह सूरी, अकबर प्रशासन, फरमान प्रणाली, कारवाँ व्यापार।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
23rd November 2025	27th November 2025

विषय-वस्तु

मुगल काल का ऐतिहासिक संदर्भ और प्रशासनिक आवश्यकताएँ

मुगल साम्राज्य भारतीय इतिहास का सबसे शक्तिशाली , व्यापक और संगठित साम्राज्य था , जिसने उत्तरी, मध्य और पूर्वी भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों पर भी अपना प्रभाव स्थापित किया। इतने विशाल साम्राज्य को नियंत्रित करने के लिए **एक मजबूत परिवहन और संचार व्यवस्था** आवश्यक थी।

मुगल शासन की प्रशासनिक संरचना अत्यंत विस्तृत थी—

- सूबे
- परगने
- सरकार
- जागीर
- मंसबदारी
- राजस्व प्रणाली

इन सभी को सुचारु रखने के लिए **सड़कों, मार्गों, दस्ता-बंदी, दूत-व्यवस्था, डाक-चौकियों और सरायों का एक विस्तृत जाल** चाहिए था। सैनिक गतिविधियाँ भी व्यवस्था पर निर्भर थीं। सेना को तीव्र गति से एक स्थल से दूसरे स्थल तक स्थानांतरित करने के लिए **घोड़े, हाथी, ऊँट और बैलगाड़ियों की सुव्यवस्थित उपलब्धता** अनिवार्य थी। इसी प्रकार व्यापार , कर-संग्रह, कृषि उत्पादन, स्थानीय बाजारों से नगरों तक वस्तुओं की ढुलाई—यह सब **मुगल परिवहन प्रणाली** के माध्यम से ही संचालित होता था।

मुगल काल की सड़क निर्माण नीति

शेरशाह सूरी की विरासत और मुगल विस्तार

हालाँकि सड़क निर्माण की प्रगतिशील व्यवस्था की वास्तविक शुरुआत **शेरशाह सूरी**

(1540–1545) ने की, परंतु मुगलों ने इसे और अधिक विकसित , विस्तृत और संगठित किया।

शेरशाह की प्रमुख उपलब्धि—

- **सड़क-ए-आज़म (ग्रैंड ट्रंक रोड)**
  यह मार्ग बंगाल से लेकर काबुल तक लगभग 2500 किमी लंबा था।

मुगलों ने—

- सड़कों का चौड़ीकरण
- फिर से मरम्मत
- पुल निर्माण
- सुरक्षा बढ़ाने
- मार्ग किनारे वृक्षारोपण
- कुओं और तालाबों का निर्माण
- चौकियों की स्थापना

विशेषकर अकबर और जहाँगीर ने सड़क निर्माण को साम्राज्य की आर्थिक धमनियों के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण माना

मुगल काल की प्रमुख सड़कें

मुगल काल में निम्न प्रमुख सड़कें साम्राज्य की आर्थिक , राजनीतिक और प्रशासनिक गतिविधियों का केंद्र थीं—

ग्रैंड ट्रंक रोड

काबुल ⟶ पेशावर ⟶ लाहौर ⟶ दिल्ली ⟶ आगरा ⟶ इलाहाबाद ⟶ बनारस ⟶ पटना ⟶ ढाका

आगरा–अजमेर–जोधपुर–अहमदाबाद मार्ग

यह व्यापार, वस्त्र उद्योग और पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक पहुँच का मुख्य मार्ग था।

आगरा–गोलकोंडा मार्ग

दक्खिन विजय, गोंड राज्यों, और दक्षिण भारत के व्यापार के लिए आवश्यक।

लाहौर–कश्मीर मार्ग

जहाँगीर की यात्राओं हेतु प्रसिद्ध।

आगरा–गुजरात मार्ग

विदेशी व्यापार (अरब–अफ्रीका–यूरोप) के लिए महत्वपूर्ण।

सड़कें केवल मार्ग नहीं थीं, बल्कि मुगल प्रशासन की रीढ़ थीं।

सराय व्यवस्था: मुगल परिवहन प्रणाली का केंद्रबिंदु

मुगल काल की सबसे विशिष्ट विशेषता थी **सराय**।

सरायों के प्रमुख उपयोग—

- यात्रियों का ठहराव
- सैनिकों का विश्राम
- व्यापारिक कारवाँ का रात्रि ठहराव
- डाकिया/दूतों की बदली
- सड़क सुरक्षा
- घोड़ों की अदला-बदली
- आपातकालीन सैन्य केंद्र

अकबर के समय लगभग **2500 से अधिक सरायें** थीं।

हर सराय में—

- रसोई
- कुआँ
- अनाज भंडारण
- अस्तबल
- प्रहरी
- दूतों के लिए विशेष कक्ष
- व्यापारियों के लिए गोडाउन

मुगल प्रशासन के अनुसार सराय दो प्रकार की थीं—

- **खानाह-ए-आम** (सार्वजनिक सराय)
- **खानाह-ए-खास** (विशेष अतिथियों के लिए)

परिवहन के साधन

मुगल काल में परिवहन के साधन विविध थे। विभिन्न क्षेत्रों में इनकी उपयोगिता भिन्न थी।

घोड़े

- प्रशासन और सैन्य कार्यों के लिए सबसे तेज़ साधन
- मंगोल घोड़े, अरबी घोड़े, और तुर्की नस्लें सबसे लोकप्रिय

ऊँट

- राजस्थान, गुजरात, पंजाब के शुष्क क्षेत्रों में
- व्यापारिक कारवाँ में सबसे उपयोगी

हाथी

- राजकीय यात्राएँ
- सैन्य अभियान
- भारी सामान ढोने में उपयोग

बैलगाड़ी

- ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में
- अनाज, नमक, कपड़ा, निर्माण सामग्री की ढुलाई

पालकी

- अमीर वर्ग और महिलाओं की यात्रा
- दूतों की तेज़ यात्रा

मुगल काल में जल परिवहन

मुगल साम्राज्य में जलमार्ग प्रमुख थे—विशेषकर गंगा–यमुना–ब्रह्मपुत्र।

प्रमुख नदियाँ—

- गंगा
- यमुना
- ब्रह्मपुत्र
- गोदावरी
- नर्मदा

नदी मार्गों पर—

- अनाज

- लकड़ी
- कपड़ा
- नमक
- घी
- आयात/निर्यात के सामान

का परिवहन होता था।

जहाँगीर ने कश्मीरी झीलों का उपयोग नौकाओं के माध्यम से यात्राओं में किया।

संचार व्यवस्था: मुगल शासन की रीढ़

मुगलों की संचार प्रणाली इतनी कुशल थी कि यूरोपीय यात्रियों ने इसकी भरपूर प्रशंसा की।

संचार व्यवस्था के प्रमुख आधार—

- **घुड़सवार दूत** (काबुल)
- **पैदल दूत** (रनर)
- **डाक-चौकी व्यवस्था**
- **सराय आधारित आदान-प्रदान तंत्र**
- **फरमान प्रणाली**
- **जासूसी नेटवर्क**
- **डाक-चौकी प्रणाली**

अकबर ने हर 2–3 कोस पर **एक डाक चौकी** स्थापित की थी।

एक चौकी पर—

- 12–15 दूत
- 10–15 घोड़े
- रात्रि प्रहरी
- कागज, मोहर, स्याही
- चौकीदार/मुंशी

उपलब्ध होते थे।

यूरोपीय यात्री बर्नियर के अनुसार—
"डाक व्यवस्था इतनी तेज़ थी कि 100–120 मील प्रतिदिन संदेश पहुँचाया जा सकता था।

संचार के आधिकारिक साधन

फरमान

बादशाह द्वारा जारी शाही आदेश

- लाल मुहर
- अरबी/फारसी लेख
- सूबे-परगनों में भेजे जाते थे

दास्तक

व्यापारिक अनुमति पत्र

परवाना

सरकारी आदेश, स्थानीय अफसरों के लिए

अर्ज-ए-दस्त

जनता द्वारा दी गई याचिकाएँ

जासूसी तंत्र

अबुल फ़ज़ल के अनुसार—
"अकबर के शासन में सर्वश्रेष्ठ जासूसी तंत्र था।"

व्यापार में परिवहन और संचार का योगदान

मुगल काल में व्यापारिक क्रांति हुई।
परिवहन-संचार इसके कारण मुख्य कारण बने—

मुख्य व्यापारिक वस्तुएँ—

- कपास
- रेशम
- मसाले
- नमक
- धातुएँ
- घोड़े
- मोती
- चंदन
- अफीम

व्यापारिक केंद्र—

- आगरा
- दिल्ली
- लाहौर
- पटना
- अजमेर
- सूरत
- अहमदाबाद

मुगल काल में **कारवाँ** हजारों की संख्या में यात्रा करते थे। सरायें इन्हें सुरक्षा और आश्रय देती थीं।

सैन्य उपयोग

सैन्य संगठनों को तीव्र गति से संचालित करने हेतु—

- घोड़ों की उपलब्धता
- हाथियों के दस्ते
- सड़क नेटवर्क
- संदेशवाहक
- शाही मार्गों की सुरक्षा

आवश्यक थी।

औरंगज़ेब के दक्कन अभियान में परिवहन भूमिका निर्णायक थी।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

राजस्थान–दक्खिन–बंगाल–कश्मीर की संस्कृतियों का मिलन।

भाषाई प्रभाव

फारसी, हिंदी, उर्दू का प्रसार।

धार्मिक यातायात

मक्का (हज) यात्राओं में सूरत बंदरगाह मार्ग प्रमुख था।

शहरीकरण

सराय, बाजार और मार्गों के कारण छोटे-छोटे कस्बे विकसित हुए।

निष्कर्ष

मुगल काल में परिवहन और संचार व्यवस्था एक सुव्यवस्थित , व्यापक और उन्नत प्रणाली थी, जिसने साम्राज्य की एकता, स्थिरता और प्रशासनिक शक्ति को मजबूती प्रदान की। यह व्यवस्था केवल राजनीतिक नियंत्रण का साधन नहीं थी, बल्कि आर्थिक विकास, व्यापारिक उन्नति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक एकता का केंद्रबिंदु भी थी। मुगलों ने सड़कों, सरायों, पुलों, डाक चौकियों और जलमार्गों को एक संगठित प्रणाली का रूप दिया। शेरशाह सूरी की सड़क-ए-आज़म को उन्होंने और विस्तृत किया , जिससे भारत का पूर्ण भूभाग एक नेटवर्क में बंध गया। इसी परिवहन व्यवस्था ने दूरस्थ प्रांतों —बंगाल, कश्मीर, गुजरात, दक्खिन—को एक राजनीतिक इकाई के रूप में जोड़े रखा।

संचार व्यवस्था मुगल प्रशासन की रीढ़ थी। घुड़सवार और पैदल दूतों के माध्यम से सूचनाएँ त्वरित गति से राजधानी तक पहुँचती थीं। अकबर की डाक-चौकी प्रणाली और बादशाही फरमान व्यवस्था ने प्रशासन को गति दी। जासूसी तंत्र ने सूचनाओं की विश्वसनीयता सुनिश्चित की। इस सबके कारण मुगल साम्राज्य इतने विशाल क्षेत्र में स्थिर रह सका। परिवहन और संचार ने व्यापारिक गतिविधियों को बल दिया। सूरत , आगरा, दिल्ली, अहमदाबाद, लाहौर आदि नगर अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र बने। कारवाँ प्रणाली , सरायों की सुरक्षा, और नदीमार्गों की सुविधा ने भारत को एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक शक्ति बना दिया। इस प्रकार, मुगल काल की परिवहन और संचार व्यवस्था भारतीय इतिहास की सबसे सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं में से एक थी। इसका प्रभाव आज भी भारतीय सड़क नेटवर्क , पुराने मार्गों, नगरों और प्रशासनिक संरचनाओं में देखा जा सकता है। मुगल काल ने न केवल अपने समय को प्रभावित किया , बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी भारत की संरचना में गहरे निशान छोड़े।अतः यह स्पष्ट है कि मुगल परिवहन और संचार प्रणाली केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं थी , बल्कि यह भारत की सामाजिक , आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवनधारा का आधार थी और भारतीय सभ्यता के विकास की प्रमुख प्रेरक शक्ति रही।

REFERENCES

1. अबुल फ़ज़ल – **आइने-ए-अकबरी**
2. बर्नियर – **Travels in the Mogul Empire**
3. फादर मोनसेरट – **Commentary on Akbar**
4. रिचर्ड एम. ईटन – **India in the Persianate Age**
5. सतीश चंद्र – **Medieval India**
6. इरफान हबीब – **The Agrarian System of Mughal India**
7. हेनरी बेवर्ली – **The Postal System of India**
8. मोईनी खान – **Transport in Medieval India**
9. जे.एस. ग्रेवाल – **The Mughal Empire**
10. के.एन. त्रिपाठी – **मुगल भारत का सामाजिक-आर्थिक इतिहास**
11. राम शरण शर्मा – **भारत का इतिहास**
12. शेरशाह सूरी: प्रशासनिक सुधार – शोध लेख